आयोजन समिति

डॉ. रविमोहन आहूजा
डॉ. गीता शर्मा
डॉ. अंजू झाम्ब
श्री वीरेन्द्र यादव
डॉ. प्रेम शंकर पाण्डेय
डॉ. चारू गोयल
डॉ. विभा नायक
सुश्री चेतना गुप्ता
डॉ. कुलभूषण शर्मा
डॉ. सपना सिकेरा
डॉ. गगन बाकोलिया
डॉ. ऋषिराज पाठक
सुश्री. पूजा शर्मा
डॉ. वंदना
सुश्री कनिका
सुश्री पल्लवी

**संगोष्ठी संबंधी नवीन सूचनाओं के लिए कृपया महाविद्यालय की वेबसाइट देखते रहें –

http://spm.du.ac.in

अथवा संपर्क करें-

डॉ. गगन बाकोलिया:-9711531255
डॉ. वंदना विश्वकर्मा :-8178190409

संगोष्ठी-प्रतिभागिता-शुल्क –

प्राध्यापक – 1000 रुपये
शोधार्थी – 700 रुपये
विद्यार्थी – 300 रुपये

(प्रतिभागिता-शुल्क दोनों दिन के लिए है, जिसमें संगोष्ठी-सामग्री, प्रमाण-पत्र, दोपहर का भोजन एवं जलपान शामिल है)

- संगोष्ठी-प्रतिभागिता-शुल्क ऑनलाइन माध्यम से भुगतान किया जा सकता है|
- भुगतान संबंधी रसीद की सॉफ्टकॉपी spmhindi@gmail.com पर मेल करें और उसकी हार्ड-कॉपी संगोष्ठी के दिन अपने साथ अवश्य लाएं| बैंक संबंधी विवरण निम्नलिखित हैं–

NAME OF ACCOUNT HOLDER	PRINCIPAL, SHYAMA PRASAD MUKHERJI COLLEGE
BANK NAME AND ADDRESS	INDIAN OVERSEAS BANK, SPM COLLEGE,ROAD NO.57, WEST PUNJABIBAGH, NEW DELHI-110088
ACCOUNT NUMBER	1760010000004447
IFSC CODE	IOBA0001760
MODE OF PAYMENT	NEFT/RTGS
MICR	110020043

** संगोष्ठी के दिन भी रजिस्ट्रेशन स्वीकार्य होगा|

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
एवं
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
भारत सरकार

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
"समकालीन संस्कृति, संचार और साहित्य"

6-7 फरवरी, 2020

सलाहकार समिति

प्रो. राम सजन पाण्डेय, कुलपति
(बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, हरियाणा)
प्रो. सुधीश पचौरी
(पूर्व उपकुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
प्रो. चन्दन कुमार
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

संयोजिका
डॉ. शगुन अग्रवाल
(एसोसिएट प्रोफेसर)

मुख्य संरक्षक
डॉ. साधना शर्मा
(कार्यकारी प्राचार्या)

"समकालीन संस्कृति, संचार और साहित्य"

एक सार्थक संवाद हेतु सामयिक विमर्श के समीचीन विषय के रूप में "समकालीन संस्कृति, संचार और साहित्य" का चयन किया गया है| आज हमारा सबसे नज़दीकी रिश्ता तकनीक से जा जुड़ा है| उस तकनीक ने प्रकृति के साथ संघर्ष और दोहन की ऐसी प्रविधि विकसित की है, जिससे मनुष्य जाति के अस्तित्व पर ही ढेरों सवाल उठ खड़े हुए हैं|

वस्तुतः हम जिस समय और समाज में जी रहे हैं, वह बहुत ही क्रूर, हिंस और हृदय विदारक है| यह बेरोक टोक बढ़ते तकनीकीकरण और उपभोक्तावाद का समय है जहाँ धार्मिकता और आदर्शवाद के आश्वासन हमें बहुत दूर तक आश्वस्त नहीं कर पाते| नैतिकता के सन्दर्भ और आह्वान हमें क्षण भर के लिए आह्लादित तो करते हैं, पर आलोकित नहीं कर पाते| एक ओर समकालीन संचार परिदृश्य में भयावह रिक्तता और सांस्कृतिक अबोधता प्रतीत हो रही है तो दूसरी ओर सत्ता और संस्कृति के सहकारपरक संबंध भी छीजते जा रहे हैं, फलतः व्यक्ति और समाज की स्वाधीन चिंतन दृष्टि धुंधलके की ओर बढ़ रही है|

आज वैश्विक स्तर पर संचार-माध्यमों को इस तरह तैयार किया जा रहा है कि वे विचार एवं व्यवहार के स्तर पर एक ऐसी संस्कृति विकसित करें, जिससे दमन की संरचना महफूज रह सके और स्थानीय स्वायत्ता और विविधता की स्थितियां टूटती-बिखरती रहें| इस तरह आज कृत्रिम मशीनी बुद्धिवाद ने मानव विवेक के समक्ष न केवल गंभीर प्रश्न खड़ा कर दिया है, बल्कि मूल्यों और आस्था को जीवन से बेदख़ल करने की जबर्दस्त शुरुआत भी कर दी है| इस तेजी से बदलती दुनिया में शब्द-संस्कृति पर मंडराता हुआ ख़तरा साफ-साफ दिख रहा है|

कुल मिलाकर परिवर्तन के इस पूरे परिदृश्य में समकालीन संस्कृति, संचार और साहित्य के परिसर कितने प्रभावित-अप्रभावित हैं या हो रहे हैं- इसका ठीक-ठीक मूल्यांकन हमारा संकल्प है और कदाचित इस संगोष्ठी की सार्थकता भी|

संगोष्ठी में निम्नांकित उपशीर्षकों के अंतर्गत विचार विमर्श संभव है

- *सामयिकता और संस्कृति*
- *संचार क्रांति का दबाव और भारतीय संस्कृति*
- *संस्कृति निर्माण का प्रश्न : साधन या साध्य (सन्दर्भ मीडिया/साहित्य)*
- *समकालीन संस्कृति और स्त्री प्रश्न*
- *संस्कृति, मीडिया और साहित्य का लोकतंत्र*
- *अस्मिताओं की पहचान और स्थापना में मीडिया और साहित्य की भूमिका*
- *भूमंडलीकृत समाज और आदिवासी अस्मिता*
- *साहित्य में सामाजिक न्याय का प्रश्न*
- *थर्ड जेंडर – सत्ता, समाज और साहित्य*
- *संचार के साधन और स्वामित्व का प्रश्न (सन्दर्भ राष्ट्रवाद)*
- *भाषा की स्वायतत्ता (सन्दर्भ : संचार/साहित्य)*
- *संस्कृति, संचार और साहित्य के समकालीन सन्दर्भ में लोक की भूमिका*
- *संस्कृति, लोक संस्कृति और लोकप्रिय साहित्य (हिंदी)*
- *न्यू मीडिया बनाम जन संस्कृति*

इसके अतिरिक्त मुख्य विषय से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी विचार किया जा सकता है| चयनित प्रतिभागियों को प्रपत्र-वाचन की अनुमति दी जाएगी|

महत्वपूर्ण बिंदु

- *शोध-आलेख की शब्द-सीमा 2500-3000 शब्द होनी चाहिए|*
- *यह सुनिश्चित हो कि आपके आलेख में अशुद्धियाँ न हों|*
- *आलेख के प्रथम पृष्ठ पर आलेख का शीर्षक, लेखक का नाम, संस्था का नाम, ई-मेल, फोन नंबर अवश्य लिखे हुए हों|*
- *आलेख यदि गुणवत्ता की दृष्टि से समृद्ध पाए गए तो इनका प्रकाशन ISBN नंबर की पुस्तक में होगा| पुस्तक प्रकाशन संबंधी किसी भी प्रकार का निर्णय आयोजक मंडल द्वारा किया जाएगा|*
- *प्रपत्र की भाषा हिंदी या अंग्रेज़ी हो सकती है|*
- *कृतिदेव, मंगल या यूनिकोड फोन्ट में लिखे हुए आलेख ही स्वीकार्य होंगे|*
- *शोध-आलेख पीडीएफ तथा वर्ड फॉर्मेट में भेजें|*
- *शोध-आलेख spmhindi@gmail.com मेल पर भेजें|*

महत्वपूर्ण तिथियाँ :-

आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 31 दिसम्बर 2019
आलेख प्रस्तुति हेतु स्वीकृति की सूचना : 06 जनवरी 2020
पूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 20 जनवरी 2020
पंजीकरण शुल्क भुगतान की अंतिम तिथि : 25 जनवरी 2020

संगोष्ठी स्थल
उद्घाटन सत्र: राजीव गाँधी सभागार
आमंत्रित अतिथि

- *मुख्य अतिथि - प्रो. सच्चिदानंद जोशी , पूर्व कुलपति , माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय,भोपाल*
- *विशिष्ट अतिथि - प्रो. सुधीश पचौरी*
- *बीज वक्ता – श्री अभय कुमार दुबे, चिन्तक एवं विमर्शकार*

तकनीकी सत्र
कांफ्रेंस रूम -27